शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

विस्मृत लेखिका: सत्यवती मल्लिक के साहित्य का मूल्यांकन

डॉ० लक्ष्मी देवी
अतिथि प्रवक्ता, हिन्दी
हिन्दू कॉलेज, नई दिल्ली

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

विस्मृत लेखिका: सत्यवती मल्लिक के साहित्य का मूल्यांकन

- डॉ० लक्ष्मी देवी

साहित्य जगत में अपनी जगह बनाने के लिए स्त्री लेखन को काफी संघर्ष करना पड़ा। सत्यवती मल्लिक उस समय की लेखिका हैं जब महिला लेखिकाओं की उपस्थिति न्यून थी। प्रस्तुत शोध सत्यवती मल्लिक के साहित्यिक संघर्ष और अवदान को प्रस्तुत करते हुए उन्हें साहित्य जगत में विस्मरण से बाहर लाने के छोटी कोशिश है।

विषय संकेत:- *सत्यवती मल्लिक, साहित्य मूल्यांकन, स्त्री लेखन, हिन्दी लेखिकाएँ*

हिन्दी साहित्य में महिला-लेखन की एक सुदीर्घ परम्परा चली आ रही है। परन्तु पहचान पर सवालिया निशान अवश्य हैं। जिस प्रकार भारतीय समाज स्त्री को व्यक्ति मानता ही नहीं उसे सदा वस्तु की दृष्टि से ही देखता है, घर में भी उसे सिर्फ सजावट का सामान बनाकर रख दिया है। ज्यादातर परिवारों में अनेक सामाजिक-सांस्कृतिक कारणों से लड़कियों की शिक्षा बाधित होती रही है, उन्हें मनचाहा काम करने की अनुमति भी नहीं मिलती, स्त्री की इस स्थिति ने उसे अपंग सा बना दिया है। ऐसे में उसके लेखन को बराबरी कैसे मिल सकती है। साहित्य-लेखन में सदैव स्त्री को मुख्यधारा से काटकर देखा गया है। इतिहास साक्षी है कि पुरुष की प्रेरक शक्ति के रुप में स्त्री सदैव नैपथ्य में रही। परन्तु स्त्री के विकास व परिवर्तन के प्रयासों को पुरुष समाज सदैव संस्कृति का अवमूल्यन मानकार खारिज करता आया है। उन्नीसवीं-बीसवीं सदी में हम यदि दृष्टि डालें तो पायेगें कि स्त्री-लेखन को गैर-साहित्यिक की कोटि में डाल दिया गया है। इस दौर में बड़े पैमाने पर लिखी गई रचनायें पत्र-पत्रिकाओं में बिखरी पड़ी हैं। पर इन्हें साहित्य की कोटि में स्थान नहीं दिया गया, इन्हें लोक मानस से भी भुला दिया गया। बंग महिला, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान जैसे कुछ नामों को छोड़कर 20वीं शताब्दी के मध्य तक लेखिकाओं के नाम कम ही मिलेंगे जिन्हें साहित्य में स्थान दिया गया है- हाँ साहित्य में जगह न पाने वाली लेखिकाओं की भरमार है। जैसे- सम्प्रिया देवी, श्रीमती गिरिजा देवी, सरस्वती देवी, होमवती देवी, उषा देवी मित्रा, कमला देवी चौधरी, सत्यवती मल्लिक इत्यादि कुछ नाम उल्लेखनीय हैं।

सत्यवती मल्लिक भी इसी कोटि की एक सशक्त लेखिका हैं, जिनका लेखन 1935 से 1950 तक की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में बराबर चलता रहा, साथ ही कई पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं - जैसे 'मानव रत्न', 'अमिट रेखायें', 'कश्मीर की सैर' इत्यादि। इन्होंने गद्य की अधिकांश विधाओं में रचनायें की हैं जैसे - कहानी, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा वृतान्त व जीवनी इत्यादि।

1 जनवरी, 1906 ई॰ में श्रीनगर (कश्मीर) में जन्मी सत्यवती मल्लिक जी की प्रारम्भ से ही हिन्दी साहित्य में विशेष रूचि रही है। रचनात्मक साहित्य की गद्य शैलियों में सत्यवती मल्लिक की शैली का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। श्रीमती मल्लिक ने अनेक विधाओं में साहित्यिक रचनाएँ की हैं, जैसे- स्केच, कहानी, संस्मरण एवं निबन्ध इत्यादि। इसके अलावा कुछेक कविताएँ भी इन्होंने लिखी हैं।

श्रीमती मल्लिक के पिता लाला चिरंजीलाल अपने समय के प्रसिद्ध व्यापारी तथा गणमान्य समाज सेवक थे। समाजसेवा एवं परोपकार की भावना उनमें कूट-कूट भरी हुई थी। अपनी दीर्घायु के चौथे चरण में सन्यास ग्रहण कर वे 'स्वामी प्रेमभिक्षु' के नाम से विख्यात हो गये थे। उनके अनुसरण में उनका परिवार भी सरल, सात्विक एवं प्रबुद्ध बन गया था।"[i] सत्यवती मल्लिक को उनके चाहने वाले प्यार से अन्ना कहकर बुलाते थे। 'अन्ना जी' का अर्थ होता है 'माँ'। यह प्यार भरा सम्बोधन सत्यवती जी के लिए बिल्कुल ही सटीक बैठता है क्योंकि उनमें मां वाले सारे गुण विद्यमान थे। उनका विवाह छोटी उम्र में ही तत्कालीन प्रसिद्ध एडवोकेट श्री रामलाल मलिक से हो गया था। परन्तु माता के आकस्मिक मृत्यु प्राप्त हो जाने के कारण इनके ऊपर छोटे भाई-बहनों के लालन-पालन का दायित्व भी उनके ऊपर आ गया, जिसे उन्होंने सहर्ष निष्ठापूर्वक निभाया। यही

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

विस्मृत लेखिका: सत्यवती मल्लिक के साहित्य का मूल्यांकन

डॉ० लक्ष्मी देवी
अतिथि प्रवक्ता, हिन्दी
हिन्दू कॉलेज, नई दिल्ली

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

नहीं उन्होंने अपनी स्वर्गीय माता की स्मृति में श्रीनगर में स्थित कन्या पाठशाला का नाम बदलकर उनके नाम पर रख दिया।

सत्यवती जी के साहित्य में दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ विशेष रूप से विद्यमान दिखाई देती है। पहली तो सहज रोमानी मूड में स्वर्णिम दुनिया की झलकियां और दूसरी आदर्शवादी नायक को प्रतिष्ठित करने की भावना। यथार्थ और आदर्श की कटु परीक्षा की घड़ियों में उदात्त की रोमानी प्रतिष्ठा आपकी रचनाओं में समान रूप से मिलती है। इनके साहित्य की अन्य विशेषता यह भी है कि ये यथार्थ की मानवीय अनिवार्यता के साथ-साथ आदर्श की भी प्रतिष्ठा करती हैं। इन्होंने जिस युग में अपनी रचनाएँ लिखीं, वह युग विरोधी संघर्षों का युग था। यह विरोधी संघर्ष उस समय के समाज में भी विद्यमान था, जैसे- भारतीयों का स्वाधीनता संघर्ष, निम्नवर्ग के लिए अस्पृश्यता से छुटकारा पाने का संघर्ष, स्त्री के लिए शिक्षा के साथ-साथ अपने अस्तित्व की खोज का संघर्ष आदि। अत: औपनिवेशिक भारत का यह संघर्ष उनके साहित्य में परिलक्षित होता है।

सत्यवती जी एक सफल साहित्यकार होने के साथ-साथ आदर्श, सुसंस्कृत और वात्सल्यमयी माता भी हैं। यही कारण है कि उनकी कहानियों में बालमनोविज्ञान का जैसा सुन्दर और सजीव रूप परिलक्षित होता है वो अन्य कहीं देखने को कम ही मिलता है।

प्राकृतिक लालिमा से भरपूर कश्मीर इनकी जन्मभूमि है। इनका शैशवकाल भी वहीं व्यतीत हुआ था, अत: स्वभावत: उसके प्रति इनका आकर्षण बहुत है। वहाँ की सुन्दर मनोरम घाटियों का उत्कृष्ट एवं सुन्दर चित्रण इनकी रचनाओं की निजी विशेषता है। काव्य के क्षेत्र में प्रकृति का सुन्दर चित्र तो अनेक कवियों ने व्यक्त किये हैं, किन्तु कथा साहित्य के क्षेत्र में इतने मनोयोग से प्रकृति चित्रण करने वाली सत्यवती जी के अतिरिक्त कोई अन्य लेखक व लेखिका शायद ही मिले-चार मील तक सिंधु नदी की झिलमिलाती तरंगों के साथ-साथ चलकर शरबल नामक स्थान पर शहतीरों के कच्चे पुल से होकर देखा, सामने अनेक निर्झरों, सुगन्धित वन पुष्पों एवं झाड़ियों से युक्त एक सुहावना गिरिराज हमारे धैर्य बल को चुनौती दे रहा है। जहाँ-तहाँ अनेक वेगवती धाराएँ हम पर अट्टाहस कर रही हों। मार्ग हमें स्वयं ही बनाना पड़ा, क्योंकि पथ प्रदर्शक महोदय भी किंकर्त्तव्यविमूढ़ से खड़े थे।"[2]

सत्यवती मल्लिक का व्यक्तित्व बहुकोणीय है। रोजमर्रा के जीवन से उठाई गई छोटी-छोटी घटनाएँ उनकी कहानियों में पहुँचकर महत्त्व गृहण कर लेती थीं। गहरी मानवीयता, मानवीय प्रेम, मानवीय संवेदना, प्रकृति-प्रेम, जन-जीवन से जुड़ाव और सहज समतल जीवन दृष्टि उनके गुण थे। सत्यवती जी उन अल्पसंख्यक बहनों में से हैं जिन्हें हम सुसंस्कृत से सुसंस्कृत समाज में भारतीय आदर्शों के उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत कर सकते हैं।"[3] इनकी कहानियों के नारी हृदय की साध, दो फूल, कैदी, माली की लड़की मुख्य है। इनमें से एक और जहाँ नारी हृदय का मर्म, वात्सल्य भाव, बाल मनोविज्ञान का आकर्षक वर्णन मिलता है, वहीं उनका दृष्टिकोण प्रगतिशील भी है। उनका कैदी नामक स्केच पढ़कर तो सर्वश्रेष्ठ कहानी लेखक चेखव की कला का स्मरण हो हो जाता है।"[4]

महिला कहानीकारों ने प्राय: नारी जीवन की विविध समस्याओं को ही अपनी रचनाओं के प्रमुख आधार के रूप में ग्रहण किया है, किन्तु सत्यवती इसका अपवाद हैं। नारी जीवन को बाल-विवाह, विधवा, वेश्या आदि समस्याओं के संकुचित दायरे से आगे बढ़ाकर एक व्यापक धरातल पर उन्होंने अपने विषय का चयन किया है। जीवन में स्नेह, ममता, करुणा और सहानुभूति आदि कोमल भावनाओं से इन्हें रचना की प्रेरणा मिलती हैं। यही भाव उनकी रचनाओं में सर्वत्र व्याप्त है। 'दो फूल', 'जीवन संध्या', 'माली की लड़की', 'कब्रिस्तान में', 'भाई-बहन', 'हसन"इन सभी भाव-प्रधान कहानियों की मूल संवेदना यही है।

सत्यवती जी कश्मीर के एक प्रसिद्ध समाज सुधारक आर्य समाजी परिवार की सदस्या थीं। हिन्दी से भी उन्हें एक विशेष अनुरक्ति थी- दिल्ली के हिन्दी साहित्य सम्मेलन का कार्यालय चलाने में उनका अग्रणी भाग रहा है।

सत्यवती जी के ममत्व और साहित्यिक व्यक्तित्व और उनके विचार के बारे में यशपाल जैने ने कहा है– वस्तुत: वह पहला परिवार था, जिनके साथ मेरी आत्मीयता का नाता जुड़ा। मलिक जी अपने काम में व्यस्त

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

विस्मृत लेखिका: सत्यवती मल्लिक के साहित्य का मूल्यांकन

डॉ० लक्ष्मी देवी
अतिथि प्रवक्ता, हिन्दी
हिन्दू कॉलेज, नई दिल्ली

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

रहते थे, बच्चे पढ़ाई में। मैं जब भी उनके घर जाता था, सत्यवती जी मिलती थीं और इतने प्यार से मिलती थी कि मेरा मन भाव विभोर हो जाता था। वह घर संभालती थी, अतिथियों की देखभाल करती थीं, लेखन करती थीं लेकिन उनके चेहरों पर कभी भार की क्लांति एवं हैरानी दिखाई नहीं दी। वह बड़े ही मुक्त भाव से मिलती थीं और उसी मुक्त भाव से हंसती थीं ..... ऐसी विरल और निश्चल हसी अन्यन्त्र देखने में नहीं आती।"[5]

सत्यवती जी को उनके सगे-सम्बन्धी एवं बच्चे 'अन्ना जी' कहकर सम्बोधित करते थे। 'अन्ना जी' का अर्थ होता है 'माँ'। यह प्यार भरा सम्बोधन सत्यवती जी के लिए बिल्कुल ही सटीक बैठता है क्योंकि उनमें मां वाले सारे गुण विद्यमान थे।

सन् 1952 में बनारसीदास चतुर्वेदी के सहयोग से हिन्दी भवन की नींव रखी गई। जिसका प्रारम्भिक कार्यालय सत्यवती जी का घर बना, सत्यवती जी को 'हिन्दी भवन' का सचिव बनाया गया। श्रीमती मल्लिक एवं उनके परिवार ने 'हिन्दी भवन' के संचालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी सहायता के बिना हिन्दी भवन चलाना असंभव था। थोड़े ही दिनों के पश्चात् थियेटर कम्युनिकेशन विल्डिंगके दो कमरे हिन्दी भवन के लिए किराये पर लिये गये। श्रीमती मल्लिक तथा उनके परिवार का भरपूर योगदान हिन्दी भवन के संचालन में रहा। श्रीमती सत्यवती मल्लिक ने जिस लगन के साथ थियेटर कम्युनिकेशन बिल्डिंग के दो कमरों में हिन्दी भवन का संचालन किया, उसके लिए सारा जगत उनका आभारी रहेगा। उसमें पहले नई दिल्ली में कोई ऐसा स्थान न था, जहां हिन्दी के विद्वान बैठ सकें या हिन्दी की पुस्तक और पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध हो। वह पहला स्थान था जहाँ पर किसी न किसी साहित्यकार या साहित्य में रूचि रखने वाले विद्वानों का सम्मान होता था, उनके भाषण होते थे और राजधानी में हिन्दी की चर्चा होती थी। हिन्दी पत्रकार संघ की बैठकें होती थी और बाद में अखिल भारतीय श्रमजीवी पत्रकार संघ का कार्यालय भी उन्हीं कमरों में से एक में आ गया था।[6]

सत्यवती के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का प्रभाव उनकी संतानों में भी परिलक्षित होता है। पुत्री डॉ0 कपिला वात्स्यायन भारतीय कला की प्रमुख विद्वान हैं एवं प्रख्यात साहित्यकार सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' जी की पत्नी हैं। हिन्दी साहित्य में उनका योगदान अविस्मरणीय है। सत्यवती के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का प्रभाव उनकी संतानों में भी परिलक्षित होता है तभी कपिला जी आज देश के सर्वश्रेष्ठ कला केन्द्र 'इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कलाकेन्द्र' के निर्माण में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। कपिला जी ने अपनी माता के व्यक्तित्व का बखूबी विस्तार इन शब्दों में किया है– जब से होश संभाला, जब से कुछ याद आता है, तभी से अन्ना जी की 'माँ-शिक्षक' की मूर्ति भी सामने आती है। आज हाथ पकड़कर स्कूल में ले जा रही हैं, आज स्कूल की अध्यापिकाओं से कह रही हैं कि इस नटखट लड़की को नियन्त्रण में रखें, शाम को संगीत का शिक्षा दे रही हैं, रात को नृत्य के बोल और श्लोक कंठस्थ करवा रही हैं, सुबह दही बिलोना सिखा रही हैं, दोपहर को मक्की की रोटी सिंकवा रही हैं। साथ ही आज जुलूस में जाना है तो नारा कैसे देना है। दीनबंधु सी॰एफ॰ एण्ड्रूज के पास ले जा रही हैं। गाँधी जी की प्रार्थना में जाना है और अपने हाथों में मेरे कर्णफूल उतारकर अर्पण कर रही हैं। स्कूल से कुछ दिन के लिए निकाल दी गई हूँ क्योंकि डाउन-डाउन यूनियन जैक और अप-अप नेशनल फ्लेग' और 'झण्डा ऊँचा रहे हमारा कहा– तो गर्व से फूली नहीं समा रही हैं, 'उठ जाग मुसाफिर भोर भई' से प्रात:काल घूमने को कह रही हैं। हर क्षण एक स्नेह से पूर्ण शिक्षा। जीवन का कोई ऐसा पक्ष नहीं था, जिसके प्रति अन्ना जी की अगाध जिज्ञासा न रही हो। यही जागरुकता जिज्ञासा और जीवन के प्रति एक असीम स्नेह भरी आस्था उन्होंने घुट्टी में पाई और हमें दी और शिक्षा दी विवेक और चेतना की, आत्म-निर्भरता और निर्भयता की।[7]

सत्यवती जी के हृदय में गरीब जनता के लिए भी अगाध प्रेम भावना थी तथा उनकी सेवा के लिए तत्पर रहती थीं, उनके ये भाव उनकी कई रचनाओं में झलक भी आये हैं।

सत्यवती जी ने अपनी अनेक चरित्रप्रधान लघु-कथाओं का प्रणयन भी किया जिनमें से अधिकांश रेखाचित्र के गुणों से युक्त है। उनकी कुछ प्रमुख कहानियाँ इस प्रकार हैं:–

'माली की लड़की', 'हसन', 'जीवन संध्या', 'भाई-बहन', 'दो फूल', 'बेकारी में', 'कैदी', 'कब्रिस्तान में', 'वंशी की चिट्ठी', 'नारी हृदय की साध', 'बुत', 'बसन्त है या पतक्षण', 'कांणकी' इत्यादि।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

विस्मृत लेखिका: सत्यवती मल्लिक के साहित्य का मूल्यांकन

डॉ० लक्ष्मी देवी
अतिथि प्रवक्ता, हिन्दी
हिन्दू कॉलेज, नई दिल्ली

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

'माली की लड़की' नामक कहानी बाल-मनोविज्ञान का एक सशक्त उदाहरण बन पड़ा है। इसमें लेखिका ये दिखाने का प्रयास किया है कि किस प्रकार एक अभिजात वर्ग का लड़का माली की लड़की की भावनाओं को ठेस पहुंचाता है– देव कुमार का परिवार गर्मियों में पहाड़ पर गया तो वहाँ उनके नन्हें पुत्र विजय का परिचय माली की नन्हीं मुक्ता से हुआ। विजय ने उसे लूडो, कैरम, ताश आदि सिखाकर उसके नन्हें हृदय को जीत लिया। जब देवकुमार पहाड़ से लौट आये तो मुक्ता के हृदय को गहरी ठेस पहुँची। विजय जैसे साथी को पाकर उसने अपने चरवाहे साथियों को दूर कर दिया था किन्तु विजय के जाने के बाद अब वह निराश्रिता सी रह गई, उधर विजय की बुआ जब उसे चिढ़ाने के लिए माली की लड़की की चर्चा करती है तो वह नाराज हो जाता है क्योंकि अब वह इसे अपना अपमान समझता था।"[8] द्रष्टव्य है कि लेखिका ने बखूबी मुक्ता और विजय द्वारा सामाजिक भेदभाव को चित्रित करने का प्रयत्न किया है। इस प्रकार लेखिका ने मुक्ता और विजय द्वारा सामाजिक भेदभाव का मार्मिक चित्रण किया है। 'भाई-बहन' ओ दो फूल' भी बाल मनोविज्ञान को ही दर्शाता है। 'भाई-बहन' कहानी अत्यन्त रोचक एवं मार्मिक है- निर्मला और कमल भाई-बहन हैं। निर्मला बड़ी है, वह सदा कमल को चिढ़ाती रहती है, माता-पिता की डांट-फटकार का भी उस पर कोई असर नहीं पड़ता। एक दिन जुलूस में कमल खो गया, निर्मला व्याकुल हो उठी, बहुत रोई, उसके लौटने पर प्रेमाश्रु प्रवाहित करने लगी। सावित्री (निर्मला और कमल माँ) अपनी पुत्री के मन में छिपी इस स्नेहमयी बहिन का परिचय पाकर मुग्ध हो जाती है। सत्यवती जी की यह कहानी अत्यन्त प्रसिद्ध हुई। इसकी सफलता का मुख्य कारण यह था कि इसका कथानक कल्पित न होकर सत्य की मार्मिकता लिये हुए था।

'नारी हृदय की साध' में लेखिका ने लम्बोदरा और शेषनाग नदी के द्वारा स्त्री और पुरुष के मनोभावों को समझाने का प्रयत्न किया है कि किस प्रकार लम्बोदरा अपने प्रेमी से मिलने को उत्कट है तथा उसके लिए अपना सर्वस्व भी न्योछावर करने को तैयार है। जब उसका भाई शेषनाग उसे समझाते हुए कहता है– बहन इतना भी क्या? ऐसा उन्माद भी किस काम का जिसके विरह में रात-दिन एक करके तुम भागी जा रही हो, उसे तुम नहीं जानती मगर मैं जानता हूँ। वह महास्वार्थी और हृदयहीन है। तुम उससे जाकर मिलोगी तो वह तुम्हारा अस्तित्व भी मिटा देगा। तुम्हारे इस मिलन के दो मील नीचे ही तुम्हारा नाम कोई भी जानेगा।" तो नवयुवती लम्बोदरा तपस्विनी की भांति धीरे से कह उठी, भाई इस तरह चुपचाप अपना अस्तित्व मिटा देने की चाह ही नारी हृदय की सबसे बड़ी साध है।"[9] इस प्रकार लेखिका ने नारी के महान स्वरूप की व्याख्या की है।

'बसन्त है या पतझड़' कहानी में लेखिका ने बसन्त महीने का विवरण दिया है। इसमें शोभा बसन्ती रंग की साड़ी पहनकर तैयार होती है जब वह दर्पण में देखती है कि बुढ़ापे की निशानी धीरे-धीरे उसके दरवाजे पर दस्तक दे रही हैं। उसके हाथों में नीली रेखाऐं आ गई हैं, गले में दो हड्डियाँ उभर आई हैं बाल सफेद होने लगे हैं। भय उसके अंदर घर कर लेता है और वह कह उठती आज 'बसंत है या पतझड़' इसमें लेखिका ने यहाँ सौन्दर्य, यौवन और अन्ततः मानव-जीवन की क्षणभंगुरता और अनित्यता को दिखाने का प्रयत्न किया है। 'कब्रिस्तान में' में लेखिका ने एक ऐसी प्रेमिका की भावनाओं को दिखाया है जो एक अजनबी कब्र को प्रेमी की कब्र समझकर वहाँ प्रतिवर्ष आती है, किन्तु जब उसे पता चलता है कि उसका प्रेमी जिन्दा है तो वह उस कब्र को भूल जाती है, जहाँ वह घण्टों बैठकर रोई थी। 'बुत' एक ऐसी स्त्री की कहानी है जो भाग्य की मारी है। 'बुत' विधुर जमींदार के घर बैठी हुई बुतनुमा नारी का रेखाचित्र है। पति की मृत्यु के पश्चात् उसके भाई से उसका विवाह हुआ था, उसकी भी मृत्यु के पश्चात् उसके चचेरे भाई से किन्तु निरर्थक संदेहवश वहां से जो निकाली गई तो मैकेवालों ने भी न रखा और उसे एक विधुर जमींदार के घर उसके तथा उसकी मौसी के कठोर नियन्त्रण में दिन काटने को विवश होना पड़ा। बुत को देखने के पश्चात प्रो0 रमेश चन्द्र के स्वभाव में एक बड़ा परिवर्तन आ गया अब वे क्लास लेते वक्त उत्तेजित नहीं होते ना ही छात्राओं के सामने से निकलते हुए उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। 'आंसु' 'जीवन संध्या' और कांणकी भी स्त्री जीवन के विविध पहलुओं के दर्शन हमें होते हैं।

सत्यवती जी की अधिकांश कहानियाँ एवं रेखाचित्र प्रायः आत्मकथन शैली में लिखी गई है, उनमें अनुभूतिजन्य गाम्भीर्य का समावेश हुआ है, करुण रस की मार्मिकता प्रायः व्याप्त रही है, कथात्मक अंशों की

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

विस्मृत लेखिका: सत्यवती मल्लिक के साहित्य का मूल्यांकन

डॉ० लक्ष्मी देवी
अतिथि प्रवक्ता, हिन्दी
हिन्दू कॉलेज, नई दिल्ली

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

जगह उसमें विचारात्मक तथा भावात्मक अंशों का प्राबल्य रहा है। जैसे–पात्रों का वार्तालाप, हाव–भाव, मनोभाव, अतीतकालीन प्रत्येक कथानक का विकास हुआ है। इस प्रकार इनकी कहानियों में भावुकता के साथ–साथ जीवन का सामीप्य है।

कहानियों के अतिरिक्त सत्यवती जी ने काफी यात्रावृत्त एवं रेखाचित्र और भी लिखे हैं जिसमें कहानी के गुण कम है और यात्रावृत्त एवं रेखाचित्र के गुण ज्यादा विद्यमान हैं। 'अमर पथ' इनका इस प्रकार का एक यात्रावृत्त है जिसमें लेखिका ने अमरनाथ की यात्रा का विवेचन किया है कि इस यात्रा के दौरान उन्हें कितनी तरह की कठिनाईयों का सामना करना पड़ा छः वर्ष पूर्व और अब की यात्रा का तुलनात्मक अध्ययन करती हैं। इसमें लेखिका ने पहलगांव से चन्दनवाड़ी, पंचतरंगी से होते हुए अमरनाथ तक की यात्रा का बड़ी ही सजीव और मोहक दृश्य पाठक के सामने प्रस्तुत किया है। ऐसा लगता है कि जैसे हम स्वयं ही इस यात्रा के भागीदार हों और स्वयं ही यात्रा के हर पड़ाव से होकर गुजरे हैं।

'कवि महजूर' में लेखिका ने कवि महजूर का संस्मरणात्मक रेखाचित्र हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है– 'ठेठ सुघड़ कश्मीरी नाक, गले की असाधारण मृदु गम्भीर स्वर, चिन्तन की रेखाओं से युक्त भव्य मस्तक और इन सबके ऊपर नेत्रों में शेषनाग कोंसरनाग–सी नीली शांत, सुरम्य झीलों की गहराई, कश्मीर की प्रकृति ने मानों स्वयं ही अपने सम्पूर्ण सौन्दर्य को प्रकट करने के लिए मानस झील में लहराते एक बड़े कमल–सा यह मानवरूप रचा है।' प्रकृति का ऐसा मानवीकरण और मानव का ऐसी प्रकृतिकरण शायद ही अन्यत्र देखने को मिले।

'पुरी के सागर तट से' में लेखिका ने दो सहेलियों के आपस पत्र वार्ता का चित्रण किया है। 'फरीदी साहब के बाग में' में लेखिका ने फरीदी साहब का चित्रण किया है जो पचास वर्ष के हैं जिनका एक बहुत बड़ा आमों का बाग है। 'चाल पथ' में सत्यवती जी ने मोटर बस में श्रीनगर की यात्रा का बड़ा ही मोहक चित्रण किया है। 'दून घाटी' में लेखिका ने सुधीर नामक चित्रकार और मूर्तिकार के चित्रों और मूर्तियों का चित्रण विस्तारपूर्वक किया है। इनकी मूर्तियों में भारतीय संस्कृति का बड़ा ही सुन्दर और मनोरम दृश्य हमें दिखाई देता है। सुधीर खास्तगीर कलाकार होने के साथ–साथ एक साहित्यकार भी हैं, जो स्कूल में बच्चों को कला और साहित्य की शिक्षा प्रदान करते हैं। लेखिका उनकी विशेषता को चित्रित करते हुए लिखती है– कवि और कलाकार के ऐसे सुन्दर मिश्रण में जिनका व्यक्तित्व ढल रहा होगा, वे वस्तुतः सौभाग्यशाली तथा साधारण जनों के ईर्ष्या के पात्र हैं।"[10]

'कश्मीर में ग्यारह दिन' में लेखिका ने युद्ध के दिनों के कश्मीर का चित्रण किया है कि किस प्रकार से युद्ध के दौरान वहां की जलवायु, वहाँ की आबोहवा में क्या–क्या परिवर्तन आ गया है– युद्ध की जो भयावनी लहर यहां वेग से घूम गई है, इसका आभास तत्काल होने लगा। पुल पार कर वास्तव में अद्‌भुत दृश्य दिखाई दिया। चौक में जहां बसों, मोटरों का अड्डा और सिनेमा हाल था, पास वह माइसूमा बाजार जहां हमारा पुराना मकान था, जहां से हम हर वक्त आते–जाते थे, एक बदली हुई दुनिया थी, चौक के प्रायः सभी लोग दर्जी, मल्लाह, शिल्पी, दुकानदार जिन्हें मैं ठीक से पहचानती थी, उमंग साथ सैनिक शिक्षा ले रहे थे।"[11] युद्ध के समय किसी भी परिवेश में किस तरह के अन्तर आ जाते हैं, वातावरण कितना भयावह एवं विशादपूर्ण हो जाता है, जीने का अर्थ ही बदलकर रह जाता है। इन सभी बातों का विस्तार से वर्णन लेखिका ने इसमें किया है।–स्थान–स्थान पर, हर समय प्यारे कश्मीर बच्चे बच्चियाँ सेब, नाशपाती, अखरोट, शहतूत लिये मानों स्वागत को खड़े रहते हैं, लेकिन आज वहां दिखाई दी टूटी–फूटी अधजली बसों की हड्डियां सी"[12] लेखिका का हृदय तब और दुखी हो जाता है जब उन्होंने वह स्थान देखा जहाँ पर कश्मीरी पुत्रियों, युवतियों और औरतों ने अपनी लाज बचाने के लिए छलांग लगा दी। यहाँ पर यह भी द्रष्टव्य है कि आतंकवादियों और देशद्रोहियों की कोई जाति नहीं होती और न ही वो किसी एक जाति वर्ग के लोगों पर हमला करते हैं। बल्कि वह हर जाति पर हमला करते हैं और इसे धर्म युद्ध में तब्दील कर जनता के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। बचे–खुचे लोगों ने दीन–दीन दशा में बताया कि कैसे हिन्दू, मुस्लिम, सिख किसी का भी भेद न कर कबायलियों ने सभी को लूटा है और कैसे सुन्दर युवती कन्याओं व स्त्रियों को ले गये।"[13] चाहे वो किसी भी जाति या समाज की क्यों न हो।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

विस्मृत लेखिका: सत्यवती मल्लिक के साहित्य का मूल्यांकन

डॉ० लक्ष्मी देवी
अतिथि प्रवक्ता, हिन्दी
हिन्दू कॉलेज, नई दिल्ली

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

अन्त में मानव जीवन की जीजिविषा का चित्रण करते हुए लेखिका कहती हैं कि किस प्रकार इतना होते हुए भी कश्मीर मरा नहीं बल्कि उसमें एक नई चेतना व जागरण की लहर जागी है, अगले चार-पांच दिनों में मैंने अत्यन्त समीप से इस नई चेतना, जागरण और जन जागरण की धड़कन को स्पर्श करने का प्रयत्न किया और पाया कि वास्तव में मृत्यु के मुख में पड़कर कश्मीर ने कई दृष्टियों से अपने को कितना सबल व जागृत बना लिया है। वे गन्दे-भीरू अशिक्षित कहलाने वाले लोग, अंधकारपूर्ण वातावरण के सामने कैसे चमकते नक्षत्र से बन गये हैं।"[14]

'केसर के देश में भी लेखिका ने कश्मीर के सौन्दर्य का ही वर्णन किया है। धरती से जायें या आकाश मार्ग से पांचाल शिखर को पार करते ही कश्मीर घाटी की पूर्ण सौन्दर्य एक ही झलक में यात्री के हृदय पर अंकित हो जाती है।

सत्यवती जी ने दिल को छू लेने वाले हर प्राणी का रेखाचित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है, चाहे वो समाजसेवी हों, राजनीतिज्ञ हों, वैज्ञानिक हों या फिर जंगल में रहने वाली कोई बुढ़िया हो, यानि कि इनमें सत्यवती जी ने लगभग हर वर्ग को समेटा है। 'अमिट चित्र' में लेखिका ने गुरू रविन्द्रनाथ ठाकुर का रेखाचित्र प्रस्तुत किया है। अपनी पुस्तक 'मानव रत्न' के बारे में लेखिका का कहना है– अध्ययन, सम्पक्र अथवा सुनने, सुनाने से जिन आकृतियों ने रेखाचित्र का रूप धारण कर लिया, 'मानव-रत्न' उसी भाव-कुसुम की एक पंखुड़ी मात्र है।"[15] इस संग्रह में लेखिका कई महत्त्वपूर्ण एवं गणमान्य व्यक्तियों के रेखाचित्र खीचें हैं। 'राष्ट्रमाता बा' में लेखिका ने कस्तूरबा गांधी का रेखाचित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है। उनकी दिनचर्या इस प्रकार है– प्रात: 4 बजे जाड़े के दिनों में पैंसठ वर्षीय नारी को नंगे पैर, हाथों में लैंप लिये आश्रम में जिस स्फूर्ति से घूमते देखा, मध्याह् पांच बजे तक भी उसी उत्साह से इधर-उधर ऊपर-नीचे काम-काज में व्यस्त देख मेरे आश्चर्य की सीमा न थी।"[16] गाँधी जी का वर्णन भी इस रचना में मिलता है कि वो कड़ी प्रवृत्ति के थे। कस्तूरबा अपने को बार-बार देश सेवा के लिए अर्पण किया है, उस असाधारण नारी की कठोर साधना को देखते हुए लेखिका के हृदय से अनायास ही ये शब्द निकल पड़े हैं– बा की तुलना, महलों में वियोग के आंसू बहाने वाली यशोधरा एवं उर्मिला से नहीं, अपितु चिरसंगिनी सीता अथवा एवं प्राणदात्री सावित्री से ही हो सकती है। शरत चांदनी की तरह उज्ज्वल चांदनी की पुण्यधारा सी निर्मल, युगान्तर से अपने अस्तित्व को मिटाकर, पुरुष को गौरव प्रदान करती हुई, भारतीय नारी का श्रेष्ठ स्वरूप, जिसके दोनों महिमामय हाथ पालना झुलाते, पलकें प्रतिक्षा में और प्राणछाया की भांति साथ-साथ चली है।"[17] स्त्री का यहीं महिमामय स्वरूप सत्यवती ने 'सरोज नलिनी दत्त' में भी देखा है जिन्होंने बंगाल की स्त्रियों के जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव करते हुए उनके उत्थान हेतु कार्य किये। श्रीमती दत्त का मानना था कि पुरुष के अधूरे निराशाजनक संसार को व्यवस्थित रूप से केवल स्त्रियाँ ही चला सकती हैं। उन्होंने 'कमला' नामक पत्रिका में वयस्कों की शिक्षा पर लेख में कहा है– पुरुष राजनीतिक कार्यों में व्यस्त है, उन्हें फुर्सत नहीं। आओ हम नारियां जागें और अपने कष्टों के उपाय सोचें। मैं चाहती हूँ प्रत्येक जिले, कस्बों, गाँव और मुहल्ले में एक स्थान अवश्य रहना चाहिए, जहाँ स्त्रियाँ आपस में मिल सकें, परस्पर विचार-विनिमय में शिक्षा के उच्च आदर्श समझ सकें और निजी समस्याओं को सुलझा सकें।"[18] इसी प्रकार लेखिका ने 'मैडम माण्टिसरी' कीमैडम माण्टिसरी' और 'मिसरीड्' की मिसरीड् को समाजसेविका के रूप में चर्चा की है। 'मैडम क्यूरी' में उनके व्यक्तित्व, कुछ करने की चाहत और अन्त में किस प्रकार से उन्होंने मंजिल प्राप्त की, उसका विस्तृत वर्णन इसमें किया है। 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई' में लक्ष्मीबाई के जीवन चरित्र को शब्दों के चित्रों द्वारा लकीरों में उभारा है। 'डोरीथ वर्डसर्वथ' कीट महान कवि विलियम वर्डसवर्थ की बहन के चरित्र को चित्रित किया है।

'ग्रेसडार्लिंग' में ग्रेसडार्लिंग के महान चरित्र का वर्णन है, जिन्होंने छोटी सी उम्र में ही अपने पिता के साथ मिलकर पांच लोगों की जान बचाई थी। 'जून देदी' की जून देदी से लेखिका को बाल तल कैम्प के दौरान मिली थीं, जिन्होंने यात्रा के दौरान थकी हुई लेखिका की मदद की थी।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

विस्मृत लेखिका: सत्यवती मल्लिक के साहित्य का मूल्यांकन

डॉ० लक्ष्मी देवी
अतिथि प्रवक्ता, हिन्दी
हिन्दू कॉलेज, नई दिल्ली

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

लेखिका ने अन्य कई महान समाजसेवी, राजनीतिज्ञ पुरुषों की भी अपनी रचना का विषय बनाया है। जैसे- 'पंजाब केसरी लाला लाजपत राय', 'महामना मालवीय जी', 'नेताजी सुभाष चन्द्र', 'अब्राहम लिंकन', एवं 'संयोग' नामक कहानी के नायक राधाकृष्णन से हुई मुलाकात का चित्रण है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि सत्यवती मल्लिक एक महान व्यक्तित्व की स्वामिनी थीं तथा कहानियों, संस्करणों, रेखाचित्रों और यात्रावृत्तों में हमें समाज के हर तबके का चित्रण दिखाई देता है, क्योंकि वें किसी एक भाषा, एक क्षेत्र व एक देश तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि जहाँ के जिस पात्र ने उनके हृदय को द्रवित किया, उसे ही अपनी रचना का हिस्सा बना लिया।

संदर्भः-

1- रांग्रा, रणवीरः नारी हृदय की साध, आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली 2006, पृष्ठ 9
2- रांग्रा, रणवीरः नारी हृदय की साध, आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली 2006, पृष्ठ 102
3- मल्लिक, सत्यवती, अमीट रेखाएँ, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली 1955, पृष्ठ परिचय से
4- रांग्रा, रणवीरः नारी हृदय की साध, आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली 2006, पृष्ठ 112
5- रांग्रा, रणवीरः नारी हृदय की साध, आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली 2006, पृष्ठ 116
6- रांग्रा, रणवीरः नारी हृदय की साध, आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली 2006, पृष्ठ 122
7- रांग्रा, रणवीरः नारी हृदय की साध, आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली 2006, पृष्ठ 143
8- गुप्ता, डा. उर्मिला, स्वातन्त्र्योत्तर कथा लेखिकायें, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1967, पृष्ठ 19
9- रांग्रा, रणवीरः नारी हृदय की साध, आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली 2006, पृष्ठ 36
10- मल्लिक, सत्यवती : अमरपथ अत्तर चन्द एण्ड संस दिल्ली 1954, पृष्ठ 12
11- मल्लिक, सत्यवती : अमरपथ अत्तर चन्द एण्ड संस दिल्ली 1954, पृष्ठ 87
12- मल्लिक, सत्यवती : अमरपथ अत्तर चन्द एण्ड संस दिल्ली 1954, पृष्ठ 87
13- मल्लिक, सत्यवती : अमरपथ अत्तर चन्द एण्ड संस दिल्ली 1954, पृष्ठ 87
14- मल्लिक, सत्यवती : अमरपथ अत्तर चन्द एण्ड संस दिल्ली 1954, पृष्ठ 89
15- मल्लिक, सत्यवती : मानव रत्न, रणजीत प्रिटिर्स एण्ड पब्लिर्स, 1950 वक्तव्य से
16- मल्लिक, सत्यवती : मानव रत्न, रणजीत प्रिटिर्स एण्ड पब्लिर्स, 1950, पृष्ठ 42-43
17- मल्लिक, सत्यवती : मानव रत्न, रणजीत प्रिटिर्स एण्ड पब्लिर्स, 1950, पृष्ठ 52
18- मल्लिक, सत्यवती : मानव रत्न, रणजीत प्रिटिर्स एण्ड पब्लिर्स, 1950, पृष्ठ 60

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN